

गोहाना: हरियाणा का 23वाँ ज़िला

चर्चा में क्यों?

संत कबीर दास की 626वीं जयंती के अवसर पर गोहाना में एक सभा को संबोधित करते हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सहि सैनी ने घोषणा की कि **सोनीपत के गोहाना को हरियाणा का 23वाँ ज़िला घोषित किया जाएगा**।

मुख्य बटु:

- राज्य में नए ज़िले बनाने के लिये एक समतिबिनाई गई है और यह तीन महीने के भीतर अपनी रिपोर्ट देगी। जिसके बाद गोहाना को राज्य का नया ज़िला घोषित किया जाएगा।
- सभा के दौरान मुख्यमंत्री ने घोषणा की:
 - गोहाना में **संत कबीर** के नाम पर एक चौक का नरिमाण।
 - लाइब्रेरी और लंगर हॉल के नरिमाण के लिये गोहाना धानक शक्ति सभा को 31 लाख रुपए का आवंटन।
 - आवश्यक भूमि उपलब्ध होते ही रोहतक-जींद रोड पर बाई-पास का नरिमाण तुरंत शुरू किया जाएगा।
 - सरकारी नौकरियों में लंबति पदों को पूरा किया जाएगा।
- मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि **हरियाणा अंतयोदय परिवार परविहन योजना (HAPPY)** शुरू की गई है, जिसके तहत ₹1 लाख से कम आय वाले 23 लाख परिवारों के 84 लाख व्यक्तियों को हरियाणा राज्य परविहन की बसों में सालाना 1000 किलोमीटर तक की नशुलक यात्रा की सुवधि दी जाती है।
 - चरियु योजना** के तहत, सरकार आर्थिक रूप से वंचित व्यक्तियों को सरकारी और नजी अस्पतालों में **प्रतिवर्ष ₹5 लाख तक का नशुलक इलाज़ मुहैया करा रही है**
 - राज्य सरकार ने **महापुरुषों द्वारा दी गई शक्तिओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिये महापुरुष सम्मान प्रचार प्रसार योजना** भी शुरू की है

संत कबीर दास

- संत कबीर दास का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर में हुआ था। वे 15वीं शताब्दी के रहस्यवादी कवि, संत, समाज सुधारक और **भक्ति आंदोलन** के समर्थक थे।
- कबीर की वरिसत आज भी **कबीर पंथ** (एक धार्मिक समुदाय जो कबीर को संस्थापक मानता है) के नाम से प्रसिद्ध संप्रदाय के माध्यम से चल रही है।
- उनका प्रारंभिक जीवन एक मुस्लिम परिवार में बीता, लेकिन वे अपने गुरु, हद्वि भक्ति नेता **रामानंद** से बहुत प्रभावित थे।
- कबीर दास की रचनाओं का भक्ति आंदोलन पर गहरा प्रभाव पड़ा और इसमें **कबीर ग्रंथावली, अनुराग सागर, बीजक तथा साखी ग्रंथ** जैसे शीर्षक शामिल हैं।
 - उनके पद सखि धरम के धर्मग्रंथ **गुरु ग्रंथ साहबि** में पाए जाते हैं
 - उनके काम का बड़ा हसिसा पाँचवें सखि गुरु, **गुरु अर्जन देव** द्वारा संकलित किया गया था
 - वे अपने दो-पंक्त वाले दोहों के लिये सबसे ज़्यादा जाने जाते हैं, जिन्हें '**कबीर के दोहे**' के नाम से जाना जाता है।
- कबीर की रचनाएँ **हदि भाषा** में लिखी गई थीं, जिससे समझना आसान था। वे लोगों को ज्ञान देने के लिये दोहों में लिखते थे।